JSUNIL TUTORIAL

ठहरे अगर किसी के दर पर, कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जा देखो कोई घर
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन।

(*i*) अनिकेतन का अर्थ है—
(क) बेरोज़गार (ख) भिखारी
(ग) प्रवासी (घ) बेघर।

(*ii*) ये अपने लिए क्या नहीं बनाना चाहते?
(क) घर (ख) महल
(ग) संपत्ति (घ) दुख।

(*iii*) ऐसे मनमौजी क्या देखकर दुखी हैं?
(क) महल (ख) अपार धन
(ग) लोगों में अपनेपन की कमी (घ) दुख को।

(*iv*) 'रमते राम' में कौन-सा अलंकार है?
(क) पुनरुक्ति प्रकाश (ख) यमक
(ग) अनुप्रास (घ) श्लेष।

(*v*) कवि को इस संसार के लोग क्या समझते हैं?
(क) भिखारी (ख) ठग
(ग) अवारा (घ) घुमक्कड़।

4. काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए— 1 × 5 = 5

तुम भारत, हम भारतीय हैं, तुम माता, हम बेटे
किसकी हिम्मत है कि तुम्हें दुष्टता-दृष्टि से देखे?
ओ माता, तुम एक अरब से अधिक भुजाओं वाली,
सबकी रक्षा में तुम सक्षम, हो अदम्य बलशाली॥
भाषा, वेश, प्रदेश भिन्न हैं, फिर भी भाई-भाई,
भारत की साँझी संस्कृति में पलते भारतवासी।
सुदिनों में हम एक साथ हँसते, गाते, सोते हैं,
दुर्दिन में भी साथ-साथ जगते पौरुष ढोते हैं॥
तुम हो शस्यश्यामला, खेतों में तुम लहराती हो,
प्रकृति प्राणमयि, सामगानमयि, तुम न किसे भाती हो॥
तुम न अगर होती तो धरती वसुधा क्यों कहलाती?
गंगा कहाँ बहा करती, गीता क्यों गाई जाती?

(*i*) यहाँ किसका गुणगान किया गया है?
(क) भारत देश का (ख) भारतवासियों का
(ग) संस्कृति का (घ) उपरोक्त सब का।

http://jsuniltutorial.weebly.com/

Preview from Notesale
Page 3 of 25

JSUNIL TUTORIAL

कक्षा—नौवीं
हिंदी ('ए' कोर्स)
(द्वितीय सत्र)

समय : तीन घंटे **पूर्णांक : 90**

Preview from Notesale.
Page 7 of 25

खंड—क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए— 1 × 5 = 5

कामना ही सारे पापों की जड़ है। भगवान ने गीता में अर्जुन से कहा कि काम, क्रोध तथा लोभ, ये तीन नरक के द्वार आत्मा का नाश करने वाले हैं। अतः इन तीनों को त्याग देना चाहिए। मानव को अपने उद्धार हेतु केवल भगवान का सहारा लेना चाहिए। कलियुग में संकट, मुसीबत और दुखों से बचने का यही एकमात्र उपाय है। कलियुग में तो भगवन्नाम की अपार महिमा है। प्रभु का नाम पापी से पापी को भी तार देता है। गीता में भगवान ने स्वयं कहा है कि दुराचारी से दुराचारी भी यदि मेरा भजन करता है तो मैं उसे सारे पापों से मुक्त कर धर्मात्मा बना देता हूँ। प्रभु का नाम किसी भी समय जपा जा सकता है। नाम जपने में समय का कोई प्रतिबंध नहीं है। नाम जपने का लोभ होना चाहिए। भक्ति में, भजन में, प्रभु का नाम स्मरण करने में कभी संतोष करके नहीं बैठ जाना चाहिए कि अब और नहीं करेंगे। जिसे जपने का चस्का पड़ जाए वह बिना जपे रह ही नहीं सकता है। प्रभु नाम में वह शक्ति हैं जो बड़ी-से-बड़ी मुसीबतों से भी जीव की रक्षा करता है।

(*i*) सब पापों की जड़ है—
(क) मनुष्य का अविश्वास (ख) मनुष्य की ईर्ष्यावृत्ति
(ग) मनुष्य का सत्याचरण (घ) मनुष्य की अनंत इच्छाएँ।

(*ii*) गीता में किसने अर्जुन को उपदेश दिया था?
(क) श्रीराम (ख) श्रीकृष्ण
(ग) श्रीविष्णु (घ) श्रीब्रह्मा।

(*iii*) भगवान के नाम-स्मरण की महिमा किस युग में सबसे अधिक है?
(क) सतयुग (ख) त्रेतायुग
(ग) द्वापरयुग (घ) कलियुग।

(*iv*) प्रभु का नाम-स्मरण किस समय करना चाहिए?
(क) सुबह (ख) दोपहर
(ग) संध्या (घ) किसी भी समय।

(*v*) किस चीज़ का लोभ होना चाहिए?
(क) धन-दौलत (ख) संतान
(ग) सम्मान (घ) प्रभु नाम-स्मरण।

2. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए— 1 × 5 = 5

विश्व के समस्त जीवधारियों में सृष्टिकर्ता की सर्वश्रेष्ठ कृति मानव-देह है और मानव-देह के प्रभु प्रदत्त

http://jsunilTutorial.weebly.com

JSUNIL TUTORIAL

कक्षा—नौवीं

हिंदी ('ए' कोर्स)

(द्वितीय सत्र)

समय : तीन घंटे **पूर्णांक : 90**

Preview from Notesale.co.uk
Page 13 of 25

खंड—क

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए : 1 × 5 = 5

किसी भी व्यक्ति के लिए अपने सामान्य कार्यों को करने के साथ-साथ अपने निजी कार्य करने भी आवश्यक हो जाते हैं, क्योंकि स्वयं कार्य करने से कार्य-कौशल बढ़ता है। मनुष्य के अंदर छिपी आलस्य की भावना का विनाश होता है। उसकी अपने दायित्वों के प्रति रुचि बढ़ती है। स्वयं कार्य करने वाला व्यक्ति आदर्श एवं कर्मठ व्यक्ति की श्रेणी में माना जाता है। उसका यह कार्य उसके जीवन से आलस्य तथा कामचोरी करने वाले भावों को एकदम से मिटा देता है। जीवन में सफलता के शिखर पर पहुँचने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य स्वयं ही करने चाहिएँ। मुंशी प्रेमचंद, लाल बहादुर शास्त्री, इब्राहिम लिंकन आदि ऐसी ही महान विभूतियाँ हैं जो अपने सामान्य और निजी कार्य स्वयं ही करना पसंद करते थे, तभी इतने महान युग-निर्माता बने। अत: सभी को अपने सामान्य और निजी कार्य स्वयं करने चाहिए।

(i) स्वयं कार्य करने से कार्य क्षमता में क्या आती है?
(क) चंचलता (ख) कुशलता
(ग) निपुणता (घ) गति।

(ii) मनुष्य के अंदर छिपी किस भावना का कार्य करने से नाश होता है?
(क) हीन (ख) आलस्य
(ग) उमंग (घ) अहंकार।

(iii) स्वयं कार्य करने वाला व्यक्ति क्या माना जाता है?
(क) कर्महीन (ख) कर्मचारी
(ग) कर्मकार (घ) कर्मठ।

(iv) इब्राहिम लिंकन कहाँ के राष्ट्रपति थे?
(क) जर्मनी (ख) रूस
(ग) अमेरिका (घ) ऑस्ट्रेलिया।

(v) इस गद्यांश का उचित शीर्षक होगा—
(क) आलस्य का त्याग (ख) कर्मशीलता
(ग) आत्मानुभव (घ) कर्मठता।

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए— 1 × 5 = 5

मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी इसलिए नहीं कहा जाता कि वह खाता, पीता, सोता, हँसता, चलता तथा संतान उत्पन्न करता है। यह सब कार्य तो पशु भी करते हैं। फिर भी मनुष्य तथा अन्य प्राणियों में क्या अंतर

http://jsuniltutorial.weebly.com/

JSUNIL TUTORIAL

एक चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा,
आँख को है चकमकाता।
हैं कई पत्थर किनारे,
पी रहे चुपचाप पानी।
प्यास जाने कब बुझेगी।
चुप खड़ा बगुला,
डुबाए टाँग जल में;
देखते ही मीन चंचल—
ध्यान-निद्रा त्यागता है,
चट दबाकर चोंच में—
नीचे गले के डालता है।

(*i*) 'पोखर' होता है—

(क) पगडंडी | (ख) [illegible]

(ग) तालाब | (घ) झरना।

(*ii*) लहरियाँ कौन ले रही हैं?

(क) लताएँ | (ख) घास

(ग) तालाब का जल | (घ) वृक्ष के पत्ते।

(*iii*) पानी के अंदर चाँदी का बड़ा-सा गोल खंभा क्या है?

(क) पत्थर | (ख) सूरज

(ग) चाँद | (घ) रेत का ढेर।

(*iv*) किनारे पर पानी कौन पी रहा है?

(क) मीन | (ख) बगुला

(ग) पत्थर | (घ) घास।

(*v*) ध्यान-निद्रा कौन त्याग रहा है?

(क) मीन | (ख) बगुला

(ग) संन्यासी | (घ) लहरियाँ।

Preview from Notesale
Page 21 of 25

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए— 1 × 5 = 5

नावें और जहाज़ नदी नद
सागर-जल पर तरते हैं।
पर नभ पर इनसे भी सुंदर
जलधर-निकर विचरते हैं॥
इंद्र-धनुष जो स्वर्ग-सेतु-सा
वृक्षों के शिखरों पर है।
जो धरती से नभ तक रचता
अद्भुत मार्ग मनोहर है॥

http://jsuniltutorial.weebly.com/